L. Ram   Roman   34

4-4-67 Probably

4-67   ओम शान्ति शिव   प्रातःक्लास

रूहानी वाप वैठ वच्चों को समझाते है उसका नाम क्या है? यहाँ जो वैठे है तो वच्चों को अच्छी रीती याद रहना चाहिये कि इस दुनिया में जो पार्ट है सो अव पूरा होता है। नाटक जव पूरा होने पर आता है तो सभी एक्टर्स समझ जाते है कि अभी हमारा पार्ट पूरा हुआ। अव जाना है घर। तुम वच्चों को भी वाप ने अभी समझ दी है। यह समझ और कोई में नहीं है। इसका मतलव कि वेसमझ है। तुम्हारे में अभी समझ है। वाप ने समझदार वनाया है। वच्चों अव नाटक पूरा होता है। यह है वेहद की वात। वच्चों की वुधी में यह जरूर होना चाहिये कि अव वेहद का नाटक पूरा होता है। अव फिर नेय सिर चक्र शुरू होना है। नई दुनियां में सतयुग था। अव पुरानी दुनियां में इस कलियुग का अन्त है। यह वाते तुम्हीं जानते हो जिनको कि वाप मिला है। नये जो आते है तो उनको भी समझाना है कि अव पार्ट पूरा होता है। कलियुग अन्त के वाद फिर सतुयुग रिपीट होता है। आत्मायें सव जो है उनको वापस जाना है अपने घर। अव नाटक पूरा होता है। इससे मनुष्य फिर समझ लेते है कि प्रल्य होती है। अव तुम जानते हो कि पुरानी दुनिया का विनाश कैसे होता है। भारत तो अविनाशी रवण्ड है। वाप भी यहा ही आते है। वाकी और सव रवण्ड रवलास हो जोवगें। यह रवयालात और कोई की वुधी में आ नहीं सके। वाप तो वच्चों को समझाते है कि अव नाटक पूरा होता है फिर रिपीट होना है। आगे नाटक का नाम भी तुम्हारी वुधी में नहीं था। कहने मात्र सिर्फ कह देते है कि यह सृष्टी नाटक है और हम सभी एक्टर्स है। आगे जव हम कहते थे तो शरीर को समझते थे। अव वाप कहते है कि अपने को आत्मा समझो और वाप को याद करो। अव हमको वापस घर जाना है। वो है स्वीट होम। इस निराकारी दुनियां में हम आत्मायें रहती है। यहाँ ज्ञान कोई भी मनुष्य मात्र में नहीं है। अभी तुम संगम पर हो। जानते हो कि अभी हमको वापस जाना है। भक्ति रवत्म होती है। पुरानी दुनियां रवत्म तो भक्ति भी रवत्म। तुम जानते हो पहले-2 कौन आते है। कैसे यह धर्म नम्वरवार आते है। यह वाते कोई शास्त्रों में नहीं है। यह वाप ही नई वाते समझाते है। कोई और समझा ही नहीं सकते। वाप भी एक ही वार आकर समझाते है। ज्ञान सागर वाप आते ही एक-वार जवकि नई दुनियां की स्थापना पुरानी दुनियां का विनाश करवाना होता है। वाप ही याद के साथ यह चक्र भी वुधी में रहना चाहिये। अव नाटक पूरा होता है हम जाते है घर। पैसे भी रवर्च किये, भक्ति करते-2 हम सतोप्रधान से तमोप्रधान वन गये। दुनियां ही पुरानी हो गई है। नाटक को पुराना हुआ नहीं कहेंगें। नाटक तो कव पुराना होता ही नहीं है। नाटक तो नित नया है। यह तो चलता ही रहता है। वाकी दुनियां पुरानी होती है। हम एक्टर्स तमोप्रधान दुरवी हो जाते है। थक जाते है। सतयुग में थोड़े ही थकेंगे। कोई वात में थकने तंग होने की वात नहीं है। यहां तो अनेक प्रकार की तंगी देरवने में आती है। तुम जानते हो कि यह पुरानी दुनियां रवत्म होनी है। सम्वधी आद कुछ भी याद नों आना चाहिये। एक वाप को ही याद करना है जिनसे विकर्म विनाश होगें। विकर्म विनाश करने का और कोई उपाय ही नहीं है। गीता में भी मनमनाभव अक्षर है परन्तु और कोई भी समझ नों सेके। वाप कहते है मुझे याद करो और वर्से को याद करो। तुम विश्व के वारिस अर्थात मालिक थे। सतोप्रधान थे। अव तमोप्रधान वन गये हो। फिर वाप दवारा अव तुम विश्व के मालिक वन रहे हो तो कितनी रवुशी होनी चाहिये। अव तुम कौड़ी से हीरे मिसल वन रहे हो। यहां पर तुम आये ही हो वाप से वर्सा लेने। अव तुम वनते हो गार्डन आफ फलावर्स। सतयुग गार्डन है तो कितना सुन्दर है। फिर धीरे-2 कलायें कम होती जाती है। दो कला कम हुई तो गार्डन मुरझाने लगा। अव तो कांटो का जंगल हो गया है। जानवरों और मनुष्यों में कोई फर्क ही नहीं रहा है। मनुष्य जानवरों से भी वदत्तर हो गये है। अव तुम यह जानते हो। दुनियां को कुछ भी पता नहीं है। यह नालेज तुमको मिल रही है। यह है नई दुनियां के लिये नई नालेज। नई दुनियां स्थापन होती है। करने वाला है वाप। सृष्टी का रचता वाप है। याद भी वाप को ही करते है कि आकर हेवन रचो।

सुखधाम रची। तो जरूर दुखधाम का विनाश होगा नां। बाबा तो रोज-2 समझाते रहते है। इसको धारन कर फिर समझाना है। पहले-2 मुख्य बात ही समझानी है कि हमारा बाप कौन है? जिससे वर्सा पाना है। भक्ति मार्ग में भी गाड फादर को ही याद करते है कि हमारे दुःख हर कर हमको सुख दो। तो तुम बच्चों की बुधी में यह स्मृती रहनी चाहिये। स्कूल में स्टुडेन्टस की बुधी में नोलेज याद रहती है नां कि घर-बार। स्टुडेन्ट लाईफ में कोई शादी आदि की कोई बात ही नही होती है। स्टडी ही याद रहती है। यहां तो फिर कर्म करते गृहस्थ व्यवहार में रहते बाप कहते है कि यह स्टडी करो। ऐसे नही कहते कि सन्यासियों के मुआफिक स्टडी छोड़ दो। यह है ही राज योग-प्रवृती मार्ग का। सन्यासियों को भी तुम कह सकते हो यह तुम्हारा है हठ योग। तुम घर बार छोड़ते हो। यहां वो बात नही है। यह दुनियां ही कैसी गन्दी है। क्या-2 लगा पड़ा है। गरीब आद कैसे रह पड़े है। बाहर से जो टूरिस्ट आते है उनको तो अच्छे-2 स्थान दिखाते है। गरीब आद कैसे गन्दे में रह पड़े है वो थोड़ेई दिखाते है। जैसे बाम्बे में कोई आवेंगे तो उनको माला कि खावेंगे। भल यह है तो नर्क ही मगर उसमें भी फर्क तो है नां। शाहूकार लोग कहां रहते है। गरीब कहां रहते है। कर्मो का हिसाब है नां। सतयुग में ऐसे गन्दे हो नही सकते। वहां भी फर्क तो रहता है नां। कोई तो सोने के महल बनावेंगे कोई चांदी के कोई ईंटो के। वहां इतने सब धर्म रहेंगे नही। यहां तो कितने खण्ड है। एक यौरप खण्ड ही कितना है। वहां पर तो सिर्फ हम ही होंगे। यह भी बुधी में रहे कि हमारी अवस्था रहे। स्टुडेन्टस की बुधी में स्टडी ही याद रहती है। बाप और वर्सा। यह तो बहुत समझाया जाता है। बाप और वर्सा। वो तो कह देते लाखों बरस वर्ष। यहां पर तो बात ही 5000 वर्ष की है। तुम बच्चे समझ सकते हो कि अब हमारी राजधानी की स्थापना हो रही है। बाकी सारी दुनियां खत्म हो जानी है। यह पढ़ाई है नां। बुधि में यही याद रहे कि हम स्टुडेन्ट है। हमको भगवान पढ़ाते है तो भी कितनी खुशी रहे। यह क्यों भूल जाता है? माया बहुत प्रबल है। यह भी भुला देती है। स्कूल में सब स्टुडेन्टस पढ़ रहे है। सब ब्रांचिज वाले जानते है कि हमको भगवान पढ़ाते है। वहां पर तो अनेक प्रकार की विदया पढ़ाई जाती है। अनेक टीचर होते है। यहां पर तो एक ही टीचर है। एक ही स्टडी है। बाकी नाईब टीचर तो जरूर चाहिये। स्कूल एक स्कूल है बाकी सब ब्रांचिज है। पढ़ाने वाला एक बाप है। बाप आकर सबको सुख देते है। तुम जानते हो कि आधा कल्प हम सुखी रहे है। तो मन में भी खुशी रहनी चाहिये नां कि शिव बाबा हमको पढ़ाते है। शिव बाबा रचना रचते है स्वर्ग की। हम स्वर्ग का मालिक बनने के लिये पढ़ते है। कितनी खुशी अन्दर में रहनी चाहिये। वो स्टुडेन्टस भी खाते पीते सब कुछ काम धाम का करते है। हां कोई-2 हास्टेल में रहते है कि जास्ती ध्यान पढ़ाई पर रहे। यहां तो हास्टल में रहने वालों से भी बाहर में रहने वाले जास्ती पढ़ते है। सर्विस करने लिये भी बच्चियां बाहर में रहती है। किस-2 प्रकार के मनुष्य आते है। यहां पर तो तुम कितने सेफ बैठे हो। कोई अन्दर घुस नां सके। यहां कोई का संग नही। पतित से बात करने की दरकार नही। बाहर में तो कैसे-2 शैतान आ जाते है। यहां कोई से बात ना करनी है। तुमको तो कोई का मुंह देखने की भी दरकार नही है। फिर भी बाहर रहने वाले तीखे चले जाते है। कितना वण्डर है। बाहर वाले कितनों को पढ़ा कर और आप समान बना कर फिर ले आते है। बाबा समाचार पूछते है। पेशन्ट को ले आते है। क्यों कि बहुत विकार है तो उनको सात रोज भठी में रखा जाता है। यह जैसे कि तुम ब्राहमणों का एक गांव है। यहां पर कोई शूद्र ले नां आना है। यहां बाप तुम बच्चों को बैठ समझाते है। विश्व का मालिक बनना है तो फिर चलन भी तो वैसी चाहिये नां। आगे चल कर तुमको बहुत-2 साक्षात्कार होते रहेंगे कि वहां क्या-2 होगा। जनावर भी कैसे अच्छे-2 होंगे। सभी अच्छी चीजे होंगी। सतयुग की कोई चीज यहां हो नां सके। फिर वहां फिर यहां की कोई चीज हो नां सके। तुम्हारी बुधी में है कि हम स्वर्ग के लिये परिक्षा पास कर रहे है। जितना

पढ़ेंगे और फिर पढ़ावेंगे टीचर बन कर औरों को रास्ता बताना है। सब टीचर्स हैं। सबको टीच करना है। वैजिजें तो वावा ने दिये हैं। वैज पर समझानी अलग है। गीता का भगवान कौनआस चित्र की समझानी अलग है। पहले-2 तो वाप की पहचान देकर वताना है कि वाप से यह वसी मिलता है। गीता वाप ने सुनाई। कृष्ण ने वाप से सुन कर यह पद पाया। प्रजापिता ब्रह्मा ब्राहम्ण भी यही ही चाहिये। ब्राहम्ण भी पढ़ते हैं शिव वावा से। तुम अभी पढ़ते हो विष्णु पुरी में जाने के लिये। यह है तुम्हारा आलौकिक घर। लौकिक परलौकिक फिर आलौकिक। नई वात है नां। भक्ति मार्ग में कब ब्रह्मा को याद नही करते है। ब्रह्मा वावा किसको कहना आता है नही। शिव वावा को याद करते है कि दुःखों से छुड़ाओ। वो है पारलौकिक वाप। यह फिर है आलौकिक वाप। इनको तुम सूक्ष्म वतन में भी देखते हो फिर यहा भी देखते हो। लौकिक वापतो यहां देखने में आता है। पारलौकिक वाप को तो परलोक में ही देख सकते है। यह फिर आलौकिक है। वण्डरफुल। यह ब्रह्मा कहां से आया। सुक्ष्म वतन वासी ब्रह्मा है। तुम फिर ब्राहम्ण कहां से आये। यह कैसे रचा जावेगा। इस आलौकिक वाप को ही समझने में मूंझते हैं। वो तो फिर भी कहेंगे निराकार है। लिंग भी कहते है नां। वो फादर है। तुम कहेंगे वो बिन्दी है। वो करके अखण्ड ज्योति वा ब्रहम भगवान कह देते है। अनेक मते है नां। तुम्हारी तो एक ही मत है। एक दवारा वाप ने मत देनी शुरु की फिर वृधी देखो कितनी होती गई। तो तुम बच्चों को वृधी में यह रखना चाहिये कि शिव वावा हमको पढ़ाते है। पतित से पावन वना रहे है। रावण राज्य में जरूर पतित तमोप्रधान वनना ही है। नाम ही है पतित दुनियां। सब दुःखी भी है। तब तो वाप को याद करते है कि हमारे दुःख हर कर हमको सुख दो। सब बच्चों का वाप एक है वो तो सबको सुख देंगे नां। नई दुनियां में तो सुख ही सुख है। वाकी सब शान्ति धाम में रहते है। यह वृधी में रहना चाहिये अभी हम जावेंगे शान्ति धाम। आज क्या है देखो फिर कल क्या होगा। जितना-2 नजदीक आते जावेंगे तो आज की दुनियां क्या है कल की दुनियां क्या होगी वो देखते जावेंगे। स्वर्ग की वादशाही नजदीक देखते रहेंगे। जैसे मुसाफिरी से लौटते थे तो तुमको सिन्ध के मग नजर आते थे। तुम बच्चों की वृधी में रहे कि स्कूल में वैठे है। शिव वावा इस रथ पर सवार होकर आये है हमको पढ़ाते है। यह भागीरथ है। वाप आवेंगे भी
*
जरूर एक ही वार। भागीरथ का नाम क्या है सो भी किसको पता नही है। यहां जब आकर वैठते हो तो वृधी में यह याद रहे कि शिव वावा आये हुये है। हमको सृष्टी चक्र का राज वता रहे हैं। अब नाटक पूरा होता है। अब हमको जाना है। यह वृधी में रखना कितना सहज है। परन्तु यह भी याद कर नही सकते है कि अभी चक्र पूरा होता है। अब हमको जाना है। फिर नई दुनियां में आकर पार्ट वजाना है। फिर हमारे वाद फलाने-2 आवेंगे। तुम जानते हो कि यह सारी चक्र कैसे फिरता है। दुनियां वृधी को कैसे पाती है। नई से पुरानी फिर पुरानी से नई होती है। विनाश के लिये तैयारियां भी देख रहे हो। नैचरल कलैमिटीज भी होनी है। इतने वाम्वस बना रखे है तो काम में तो आते है नां। वाम्वस से ही इतना काम होगा जो फिर मनुष्यों से लड़ाई करवाने की दरकार ही नही रहेगी। लश्करों को फिर छोड़ते जावेंगे। वाम्वस ठोकते आवेंगे। फिर इतने सब मनुष्य नौकरी से छूट जावेंगे तो भूखों मरेंगे नां। यह सब होने का है। फिर सिपाही आदि क्या भी क्या करेंगे। और कुदरती होते रहेंगे। वाम्वस गिरते रहेंगे। एक दो को मारते पिटते रहेंगे। खूने नाहक खेल तो होना है नां। दिल से पूछना चाहिये कि हमको क्या याद पड़ता है। अगर वाप की याद नही है तो जरूर वृधी कहीं भटकती है। विकर्म भी विनाश नां होंगे। पद भी कम हो जावेगा। परन्तु सर्विस नही करते है वाप को याद नही करते है तो दिल पर भी नही ठहरते है। सर्विस नही करते है तो वहुतों को तंग करते रहते है। कोई तो वहुतों को आपसमान वना कर और वाप के पास ले आते है। तो वावा भी देख कर खुश होते रहते है। अच्छा मीठे रौवन हार देवतायों प्रति अपने वाप वा दादा का याद प्यार और गुड मार्निग